धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

मार्च 2010

* *सत्संग में शामिल होकर*

* वह नहीं जानते, वह क्या कर रहे हैं।

* अंधविश्वास के चक्रव्यूह में घिरा समाज

* कल्याण में विशेष सतसंग और
माता पिता दिवस

* श्राद्ध का साधन

सत्संग में शामिल होकर

चमन जी लिखते हैं : मुझे इस संगत से बहुत लाभ हुआ है। पहले मैं दुविधा में था कि इधर सन्संग में आऊं या न आऊं। एक तरफ रुपये का नुकसान नज़र आता था, दूसरी तरफ सत्संग में आना भी चाहता था। फिर मधू सूदन जी से बात हुई तो उन्होंने कहा कि घर रहने से रुपये का लाभ ज़रूर है, वहां जाने से जीवन बनेगा। इधर जीवन गंवाएगा। अब जीवन बनाना है या गंवाना है यह आप देख लो। उनकी इस बात से बल मिला और मैं आ गया। कल्याण पहुचते ही श्रीमान बलबहादुर जी को प्रणाम किया जो उन्होंने पूछा कि खेड़ा साहिब के यहां काम करना क्या आपने बिल्कुल छोड़ दिया है? मैंने बताया कि हां मैंने अपना काम करना शुरू कर दिया है, तब उन्होने कहा कि कोई बात नहीं, काम तो बदलता रहता है, मगर आप एक काम करो, जीजी और खेड़ा साहिब की फोटो अपने पास रखो, सुबह उठकर दोनों को प्रणाम किया करो और धन्यवाद दिया करो कि आपकी कृपा से मेरा बेहद भला हुआ है, उनका यह कहना मुझे ज्यादा अच्छा नहीं लगा इससे पहले श्रीमान बलदेव सिंह जी ने मुझे कहा था कि तुमने बेशक वहां से काम छोड़ दिया है, परन्तु आते जाते इस मकान को प्रणाम करते रहो कि मेरा इस जगह से भला हुआ है, तब यह भी मुझे अच्छा नहीं लगा था और बलबहादुर जी की बात बहुत बुरी लगी। दिल में यह आता था कि उन लोगों ने जो मेरे साथ बृताव किया है, यह इनको पता नहीं, अगर पता होता, तब मुझे इस प्रकार की सीख नहीं देते। मुझे लगा कि मुझे इस जगह आना नहीं चाहिए था। मैं क्यों इधर आ गया।

दूसरे दिन जब सुबह श्रीमान जी ने यह सभा करवाई कि मनुष्य के पास अपना हृदय और स्वभाव देखने के लिए कोई शीशा नहीं है, वह शीशा गुरू महाराज की रोशनी है, उससे मनुष्य को अपना असली रूप दिखाई देता है, इस सभा से मुझे बहुत लाभ हुआ और अपनी तरफ ध्यान जाने लगा, और रात को फिर सभा हुई , तो इसमें सत्संग के लाभ बताए गए कि सत्संग में आकर इन्सान क्या का क्या बन जाता है और इससे दूर जाकर फिर किस तरह का बन जाता है, इससे मुझे बहुत लाभ हुआ और मुझे महसूस हुआ कि इस सत्संग से जुड़कर ही मेरा सब प्रकार से भला हुआ है और इससे दूर जाकर मैं फिर किस तरह का बन जाऊंगा, फिर यह दिखाई दिया। जिन्होंने मुझे इस सत्संग से जोड़ा, उनका उपकार नज़र आया फिर अपनी ग़ल्ती, अपना घमंड और अपनी सोच गल्त और खराब नज़र आई। मैं जो सोच रहा था कि मुझे इस तरह क्यों कहते हैं, या मैं इस जगह क्यों आ गया, ऐसी सोच बहुत खराब और नीच नज़र आई, मैने बलबहादुर जी की यह जवाब दिया था कि सिर्फ माता जी का फोटो रखूंगा, फिर बलबहादुर जी से बात करने का मौका ढूंडता रहा कि उन्हें बताऊंगा कि मेरे साथ क्या सलूक हुआ, सभाओं में यह नज़र आने लगा कि मेरे लिए जो कुछ खेड़ा साहिब के परिवार की तरफ से किया गया, उसका

शेष पेज 16 पर

धर्म जीवन

खण्ड 22 अंक 3

मार्च 2010

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

वह नहीं जानते, वह क्या कर रहे हैं।

"हे खुदा, इनको क्षमा करना, यह नहीं जानते कि यह क्या कर रहे है।" यह रोशनी भरे शब्द हजरत ईसा मसीह साहिब के मुंह से उस समय निकले, जब कुछ लोग उनको सलीब पर टांग करके खत्म कर रहे थे। वह जानते थे कि मैं बेकसूर हूं और यह अज्ञानता में मुझे खत्म कर रहे हैं।

वह आदमी जो ईसा मसीह साहिब को मार रहे थे, यह समझते थे कि हम जो कुछ कर रहे हैं, वह ठीक कर रहे हैं। यह आदमी बहुत खराब है, हानिकारक है, नीच है, इसको मारना अच्छी बात है। परन्तु ऐसे जन झूठे अंहकार के शिकार थे, जिसको नीच, पापी और खराब, अपनी दूषित सोच के कारण मानते थे। वह अपने ज़माने की सबसे महान हस्ती थे। वह नेकी, दया और भलाई की मूर्ति थे। वह अच्छाई के स्त्रोत थे। वह नैतिक वा सात्विक रोशनी के चन्द्रमा थे। वह सारी मानवता को नेकी वा दया का पाठ पढ़ाने वाले थे। ऐसी हस्ती की उस समय मानवता को अतिशय अवश्यकता थी। अज्ञानी मनष्य नहीं समझते थे कि वह पापी नहीं, वह मारने के योग्य नहीं, वह श्रद्धा, सत्कार और किसी अशं पूजा के योग्य थे। ऐसे महापुरुश को मारकर वह भलाई का नहीं बल्कि पाप का काम कर रहे हैं। वह एक भलाई के स्त्रोत को खत्म कर रहे हैं। वह केवल ईसा के दोषी नहीं, बल्कि सारी मानवता के दोषी हैं। परन्तु हार्दिक अन्धेरे में वह यह कुछ न देख सके।

इसके आगे उनको यह दिखाई नहीं देता था कि ईसा को मारने से वह केवल ईसा को ही नहीं मार रहे, परन्तु अपने भीतर की बची खुची, दया को, अच्छाई को, नेकी को भी मार रहे हैं। उसका घात कर रहे हैं। अपनी ही महा हानि कर रहे हैं। यह उनकी आंखों से पूर्ण रूप से ओझल था।

ईसा नेकी, दया और प्यार का चश्मा हैं, मूर्ति है। उनके अपने भीतर जो दया का Mini ईसा बसता है, इस ईसा को मारकर वह अपनी उस थोड़ी सी अच्छाई को भी मार रहे हैं। इस प्रकार कितना घोर अपराध कर रहे हैं। परन्तु उन अकल के अन्धों को कुछ दिखाई नही देता था।

ईसा साहिब के यह रोशनी भरे शब्द "कि यह नहीं जानते कि वह क्या कर रहे है" आज भी उतने ही सार्थक है। सब सुख अनुरागी मनुष्यों पर

लागू होते हैं। हम सब ही सुख अनुरागी होकर नहीं जानते कि हम क्या कर रहे हैं? सुख अनुरागी हो कर मनष्य को यह पता ही नहीं लगता कि कहां मेरी भलाई है और कहां मेरी तबाही है। हम जो कुछ भी कर रहे हैं, उसको अच्छा और ठीक जानकर ही कर रहे है, परन्तु परिणामों की नहीं देखते।

परम पू0 भगवान देवात्मा ने तो इससे भी आगे दर्शाया है कि ''मनुष्य सब पागल हैं, वह जो पागलखाने में बन्द हैं वह अधिक पागल हैं, पर जो नहीं भी बन्द वह भी पागल है, डिगरियों का फर्क है।''

हम मनष्यात्मा नीच सुख अनुरागी वा नीच घृणाकारी जीव हैं। सुख अनुराग अन्धेरा पैदा करते हैं, अन्धा बनाते हैं, इसलिए हमारे लिए स्वभाविक ही है कि हम नहीं जानते कि हम क्या कर रहे हैं।

जैसे छोटे बच्चे गन्दगी को, आक को, सांप को, चाकू पकड़ते हुए नहीं जानते कि हम हानिकारक, भयानक और बुरा काम कर रहे हैं, उनकी ऐसी क्रिया हमें बहुत बुरी लगती है और लपक कर उनके हाथों से छुड़वाने का यत्न करते हैं। हमारी अक्ल और अनुभव के बढ़ने के साथ हमें वह बुराई साफ दिखाई देती है, जो एक छोटे बच्चे को दिखाई नही देती।

ऐसे ही 14,15,16 वर्ष के बच्चे लिंग सुख तृष्णा के कारण इस कच्ची उम्र में कई प्रकार के मन्द कर्म करते है, वह उन्हें ठीक महसूस होते हैं और उनके दूरगामी परिणामों से वह पूर्ण अन्जान होते हैं। वह जो अपनी सेहत, नैतिकता, पवित्रता, शिक्षा और अपने भविष्य वा कैरियर आदि की महा हानि करते हैं, जिसको उनके माता पिता अपने बढ़े हुए अनुभव के कारण देखते हैं परन्तु वह स्वयं नही देखते बल्कि भाग भाग कर ऐसी गल्तियां करते हैं। वह अपने भीतर बैठे पवित्रता की मुर्ति ईसा को भी मारते हैं, परन्तु वह नहीं जानते कि वह क्या कर रहे हैं

फिर हम जो सुख अनुरागी बड़े बच्चे हैं, वह भी अपनी सुख लालसाओं से प्रेरित होकर अपनी तरफ से सब कुछ ठीक ही करते हैं, परन्तु परिणाम में हम दुख और नाश को प्राप्त होते हैं। सुख लालसाओं के अन्धेरे में हम नहीं जानते कि हम क्या कर रहे है। हमारी सुख लालसाओं का अन्धेरा यह भी देखने में असमर्थ कर देता है कि हमारी किसी क्रिया से किसी का कितना दुख पहुंचता है।

एक स्वेच्छावारी नीच अनुरागी नवयुवक पुत्र के पिता मेरे पास आए और बताया कि मैं बड़ा दुखी हूँ। मेरा पुत्र जरूरत से ज़्यादा खर्चीला है, उसने लाखों रूपये कर्ज़ा उठाकर बर्बाद कर दिया है। उसका कोई भविष्य दिखाई नहीं देता। न तो अच्छी नौकरी के योग्य है और न इस हालत में उसे छोकरी मिलेगी। मैं इतना भयभीत हूँ, मैं डरता हूँ कि कहीं मेरा दिल न फेल हो जाए और मैं रात को सो भी नहीं सकता, मुझे उसका रात दिन फिकर लगा रहता है। परन्तु जवान बेटे को बताने पर भी पता नहीं लगता। ऐसे बेटे के जीवन की गति माता पिता के लिए किस कदर दुखदाई! उनकी जान लेवा यह गति करके भी बेटे को नही पता कि वह क्या कर रहा है। अपने माता पिता को असह्य दुख दे रहा है। वह मस्त है, अपने आपको

सुन्दर, ठीक और निर्दोश समझ रहा है।

यह सचाई हमारे सबके जीवन पर ठीक बैठती हैं। हम जवान और बुढ़े तक सब अपने काम धन्धों में व्यस्त हैं। खूब दौड़ धूप कर रहे है। परन्तु हकीक़त में हम नहीं जानते कि हम क्या कर रहे है, हमारी गतियों का परिणाम क्या हो रहा है या होने वाला हैं। हम अपना सच्चा भला कर रहे है या हानि कर रहे हैं। स्वार्थ में अन्धे होकर हम अपने परिवार की, अपनी समाज की महा हानि कर रहें हैं, अपनी नेकी को खत्म कर रहे हैं।

काश! हम अपने भीतर के ईसा को जाग्रित रख सकें।

(बलदेव सिंह)

अंधविश्वास के चक्रव्यूह में घिरा समाज

विज्ञान ने इन्सान को धर्म के नाम पर स्थापित ऐसी कई प्रथाओं व अंधविश्वासों से छुटकारा दिलाने का काम किया है, जिन्हें समाज के परम्परावादी लोग तर्कहीन ढंग से मानते आ रहे थे। इन में कुछ अंधविश्वास तो बर्बरता एवं उन्माद का परिचय देते हैं, सदियों से बेटे की इच्छा में ढोंगी तांत्रिकों, बाबाओं द्वारा डायन बता कर निर्दोष महिलाओं की खुद महिलाओं द्वारा हत्या या निर्मम प्रताड़ना, अंधविश्वास के क्रूर उदाहरण हैं, अनपढ़, कूपमंडूक सोच वाले ग्रामीण इलाकों में ऐसे अंध विश्वास व्याप्त हैं पर अति आधुनिक शहरी लोग भी इस के कम शिकार नहीं हैं।

इस का बहुत सटीक प्रमाण एकाएक गणेश प्रतिमाओं को दूध पिलाने की घटना से देखने को मिला था। केवल प्रचार मात्र से गणेश प्रतिमाओं को दूध पिलाने उमड़ी भीड़ में महज अति धार्मिक सोच वाले ही नहीं, आधुनिक दंपती भी शामिल थे, अंधविश्वास में फंसे इन लोगों में स्कूल कालिजों के वे छात्रछात्राएं भी शामिल थे जिन्हें पहनावे में जींस, टौपलेस और बातचीत में सिर्फ अंगेरेजी का प्रयोग अच्छा लगता है। हालांकि बाद में अंधश्रद्धा निर्मूलन व ज्ञानविज्ञान समिति के सदस्यों ने इस अंधविश्वास को दूर कर इस का वैज्ञानिक कारण सिद्ध किया। ये वे लोग हैं जिन्होंने परीक्षा में पास होने या नौकरी पाने के उद्देश्य से केवल पढ़ने लिखने के लिए वैज्ञानिक पुस्तकें नहीं पढ़ी बल्कि तर्क व विवेक से विज्ञान को स्वीकार किया।

यह सच है कि अंधविश्वास की गहरी जड़ें, ईश्वर में लोगों के विश्वास के कारण जमी हैं, यह भी सच है कि धार्मिक लोग ही अंधविश्वास का प्रचार प्रसार अधिक करते हैं। जिन चमत्कारों को धार्मिक लोग बाबाओं, महात्माओं की ईश्वरीय सिद्धि मान बैठते हैं, वास्तव में वह कोई देवी देवता की देन न हो कर मनुष्य द्वारा विकसित विज्ञान ही है।

साईस सैंटर व ज्ञान विज्ञान समिति के सदस्य ऐसे चमत्कार आसानी से कर दिखाते हैं

और अंधविश्वासियों की आंखें खोलने के लिए इस का तर्कपूर्ण वैज्ञानिक कारण भी बताते हैं, दृष्टि भ्रम से जादूगर पीसा की मीनार और ताजमहल गायब कर दिखाते हैं। यह करतब, अंधविश्वासी लोग तंत्रमंत्र अथवा ईश्वर का चमत्कार मानेंगे, जबकि जादूगर इसे हाथ की सफाई बताते हैं।

भारत के एक मशहूर जादूगर ने अंध विश्वास का प्रचार करने वाले एक 'पहुंचे हुए बाबा' को चुनौती देते हुए कहा था कि बाबा में हिम्मत हो तो मेरे सामने आ कर अपना चमत्कार दिखाए, जिन विदेशी घड़ियों को हवा से ला दिखाने का चमत्कार बाबा करता है, ऐसे चमत्कार तो मेरे सिखाए बच्चे गली महल्लों में करते रहते हैं।

जादूगर की चुनौती बाबा को इस भय से कंपा देने के लिए काफी थी कि कहीं जादूगर ने उसे ही गायब कर दिखाया तो उस के भक्तों पर क्या बीतेगी। दरअसल, ईश्वर, भाग्य, स्वर्ग, मोक्ष को स्वीकारने वाले व्यक्ति जीवन की हकीकत और इनसानी मेहनत को महत्व नहीं देते। वे सृष्टि में मौजूद वस्तुओं और क्रियाओं को वैज्ञानिक तर्कों से समझने समझाने का प्रयास नहीं करते। वे इन सब को सिर्फ ईश्वर की देन मानते हैं जबकि प्रत्येक क्रिया के ठोस वैज्ञानिक आधार हैं।

कई साल पहले एक समाचार एजेंसी ने सोमालिया के रेगिस्तान में एक स्थान पर बादलों के बीच ईसा मसीह का चेहरा देखे जाने का समाचार जारी किया तो दुनिया भर के समाचारपत्रों ने इसे चमत्कार के रूप में प्रचारित करते हुए प्रमुखता से प्रकाशित किया। अंधविश्वासियों ने इसे ईश्वर का चमत्कार माना जबकि वैज्ञानिकों ने इस का खंडन करते हुए बादल की बनावट से उत्पन्न दृष्टिभ्रम मात्र बताया।

वैसे भी विज्ञान चाहे तो बादलों के टुकड़ों का स्क्रीन (परदे) के रूप में प्रयोग कर शक्तिशाली यंत्रों के माध्यम से किसी भी व्यक्ति की आकृति पैदा कर सकता है। आज के वैज्ञानिक युग में पढ़ा लिखा कोई भी व्यक्ति क्या अपने बच्चों को यह बताना चाहेगा कि चंद्रमा पर बुढ़िया सूत कात रही हैं। यह सब दादी मां द्वारा बच्चों को बहलाने का उपक्रम मात्र नहीं था बल्कि चन्द्रमा पर इन्सान के जाने से पहले अनपढ़ ही नहीं, शिक्षित लोग भी चन्द्रमा पर बुढ़िया का भ्रम पाले बैठे थे, बाद में पाया गया कि बुढ़ियानुमा आकृति वास्तव में चंद्रमा के अंधेरे और बेहद ठंडे भाग हैं।

यह अंधविश्वास आज भी कायम है कि पढ़ने वाले बच्चे बाबाओं या ओझाओं से पेन पढ़वा कर परीक्षा देने जाते हैं। वे अपनी कड़ी मेहनत पर भरोसा न कर अंधविश्वास को बढ़ावा देते हैं। यह स्थिति ग्रामीण इलाकों में ही होती तब भी आश्चर्य न होता किंतु शहर के आधुनिक, अभिभावक व शिक्षक ही इस प्रकार के अंधविश्वास के शिकार हों तो आश्चर्य ही नहीं, घोर आश्चर्य होता है।

इसे अज्ञानता नहीं तो और क्या कहा जाए कि कक्षा में वैज्ञानिक आविष्कारों, क्रियाओं का पाठ पढ़ाने वाला शिक्षक इस भ्रम से मुक्त नहीं होता कि उसे ईश्वर ने बना कर धरती पर पैदा

किया जबकि मनुष्य के पैदा होने (शिशु जन्म) के वैज्ञानिक कारण अब कोई रहस्य की बात नहीं रह गए।

यह भी बहुत हास्यास्पद किंतु दिलचस्प बात है कि झाड़फूंक में भरोसा रखने वाले पंडेपुजारी व तांत्रिक अस्वस्थ होने पर डाक्टर से दवा लेने अस्पताल जाते देखे गए हैं। यानी दूसरों को ठीक करने का दावा करने वाले इन लोगों पर इन की दैवीय शक्तियां काम नहीं करतीं और चोरी होने पर पुलिस में रपट लिखा कर चोरों को गिरफ्तार करने और माल बरामदगी की गुहार करते हैं। ये वे लोग हैं जिन के मन्दिरों, मजारों पर चोरी या गुम वस्तुओं का पता पूछने वाले अंधविश्वासी सिर झुकाए खड़े रहते हैं। ईश्वर की आड़ में पनपे अंधविश्वास ने देश व समाज को न सिर्फ कुंद किया है बल्कि उस के मानसिक व आर्थिक विकास को भी अवरुद्ध किया है।

अंधविश्वास की सर्वाधिक शिकार महिलाएं हैं वह यह समझने का प्रयास नहीं करती कि उन के बच्चों को शारीरिक परेशानी या मौत किसी डायन के हाथों नहीं, स्वास्थ्य संबंधी कारणों से होती है। हालांकि अंधविश्वास के विरोध में अब कई संगठन सक्रिय हैं लेकिन व्यापक प्रचार माध्यमों का भरपूर सहयोग उन्हें नहीं मिल पाता। इस के लिए घर-घर अंधविश्वास के खिलाफ जागरूकता उत्पन्न करना आवश्यक है। (सरिता के सौजन्य से)

अन्ध विश्वास की परकाष्टा पिछले दिनों टी. वी. पर मुझे स्वयं पर देखने को मिली।

आन्ध्र प्रदेश, पश्चिमी बंगाल में ऐसे दर्दनाक नज़ारे दिखाए गए जैसे :-

1) बहुत सी स्त्रियां ज़मीन पर, एक कतार में उल्टी लेटी हुई थी, और पुजारी उनके ऊपर से बार-बार भाग-भाग कर निकल रहे थे, कईयों की चीखें निकल रही थी। परन्तु मनोकामनाएं पूरी होने की आशा से वह अन्ध विश्वासी स्त्रियां यह दर्द सह रही थी, आदमियों का हजूम तमाशा देख रहा था। पुलिस भी तमाशबीन बनी हुई थी।

2) कहा जाता था कि वहां पर मन्नत मानी जाती है, और बेऔलाद को औलाद मिलती है, फिर वह मन्नत पूरी होने पर ऊंचे स्थान से उसी बच्चे को फैंक रहे थे, और नीचे उनको पकड़ने की कोशिश की जाती थी। बच्चे रो-रो कर बेहाल हो रहे थे और माता पिता उसे धर्म की क्रिया समझकर सन्तुष्ट थे।

3) कुछ जलती हुई आग से निकल रहे थे, उसमें बहुत कुछ झुलसे जा रहे थे।

4) भोपाल में लोहे की रौड को पूरी तरह गर्म करके लोग उन्हें चाट रहे थे।

5) एक स्थान पर छोटे बच्चों को सांपों से लपेटा जा रहा था, वह डर के मारे कांप रहे थे।

यह सब टीवी पर देखकर देखने वालों का दिल दहल रहा था। किस प्रकार बच्चों की मासूमियत से खेला जा रहा था, यह देखकर दिल दुख से भर रहा था। और अपने देश की बदकिस्मती नजर आ रही थी कि इस सदी में अन्ध विश्वासों का कैसा भयानक माया जाल! काश! विज्ञान के इस युग में हमारे भारतवासी कुछ जाग सकें।

सुरजीत बराड़

कल्याण में विशेष सतसंग और माता पिता दिवस

हर वर्ष की तरह इस वर्ष में भी देव समाज के इतिहासिक गांव कल्याण में यह विशष सत्संग 4 फरवरी 2010 से 7 फरवरी 2010 तक रखा गया। इसके सम्बन्ध में हित स्त्रोत वा धर्म जीवन द्वारा और निमन्त्रण पत्रों वा टैलीफोन के द्वारा धर्म सम्बन्धियों को सूचित किया गया और यहां आकर लाभ उठाने के लिए जोरदार प्रेरणा की गई।

स्थानिक धर्म सम्बधियों ने भी यात्रियों के आराम और सुविधा का पूरी कोशिश से प्रबन्ध किया गया। 50 के करीब चारपाईयां वा बिस्तरे इकट्ठे किए गए। सुन्दर बिछाई की गई। 6 स्टेटों से 60-70 के लगभग यात्री आए। यात्रियों की सेवा के लिए बलजीत सिंह जी, बूटा सिंह जी और तेजराम जी वा उनके परिवारिक जनों ने बहुत योगदान दिया। यहां पहले भी हररोज सभा रखी गई।, बजुरगों के लिए सम्मान पैदा करने और उनके चरण दबाने के साधन किए गए। एक पढ़े लिखे नौजवान ने अपने दादा जी के चरण धोने का भी साध न किया। ऐसे जन, तन मन से सत्संग के लिए तैयार थे। यू.पी., राजस्थान हरियाणा, चन्डीगढ़, गुजरात, पंजाब आदि से बहुत उत्साह के साथ यात्री आए। श्रीमान डा0 मुन्शा सिंह जी सेवा करने का सामान भी अपने साथ लेकर आए।

4 फरवरी 2010 शाम 8 बजे:- यह पहली सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। इसमें बताया कि नेचर में नियम काम करते हैं, मनुष्य का काम उन नियमों को जानना है। नियमों को पूरा करके ही लाभ उठाया जा सकता है। सभापति जी ने नेचर के विषय में बताया। सब जीवित, अजीवित अस्तित्वों के समूह को ही नेचर कहते हैं। नेचर के जिन नियमों का हमारे जीवनों से सम्बम्ध हैं, उनका जानना अति अवश्यक हैं और नियमों के भिन्न एक नियम यह है कि सब अस्तित्वों से प्रभाव निकलते हैं, वह अपने आसपास के अस्तित्वों को प्रभावित करते हैं। लम्बे समय में यह प्रभाव परिणाम पैदा करते हैं, वह दिखाई देते हैं। नमक का ढेला पीतल के बर्तन में पड़ा रहे, तो उसमें सुराख हो जाते हैं। कोयले की अंगीठी अधूरी जली अन्दर रखकर सोने से, उसकी गैस से कितने आदमियों की मौत हुई है।

मनुष्य से भी प्रभाव निकलते हैं। एक भला बनाने वाले और दूसरे बुरा बनाने वाले। जैसे प्रभावों में हम जिऐंगे, वैसे ही बनते जाऐंगे। स्थानिय दो भाईयों का उदाहरण दिया कि कैसे भिन्न-भिन्न प्रभावों में रहकर उनके जीवन के प्रोग्राम बदलते रहे। कभी वह ट्रांसपोर्टर, कभी अध्यापिक और कभी साधू बनते रहे। प्रभावों से जीवन के लक्ष्य बदल जाते हैं। सत्संग के प्रभाव भी हमारे जीवनों पर असर छोड़ते हैं और ज़ोदार प्रभाव हमारे जीवनों को बदल देते हैं। श्रीमान पंडित नेत राम जी, श्रीमान जागीर सिंह जी, श्रीमान प्रेम जी के जीवन्त उदाहरण हमारे सामने हैं। इस सभा में देवात्मा के देव प्रभावों की महिमा गहराई से अनुभव हो रही थी।

5.2.2010 सुबह 9:30:. सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। सभापति जी ने पूछा कि यहां हम क्यों आए हैं? एक ने उत्तर दिया कि कुछ समझ लेने के लिए। एक ने कहा कि कुछ

परिवर्तन लाने के लिए, किसी ने कहा कि हम धर्म प्राप्ति करना चाहते हैं। धर्म क्या है? अच्छे व्यवहारों का नाम ही धर्म है। बुरा बोलना, गाली गलौच करना, धर्म के विरूद्ध व्यवहार हैं। दूसरों की हानि करना, अनुचित दुख पहुंचाना धर्म के विरूद्ध व्यवहार हैं। शराब पीना अपने प्रति दुर्व्यवहार है। एक शराबी अपने मेहरबान ससुर और अपनी पत्नी को गालियां देता रहता था, यह अधर्म है। धर्म का काम है मनष्य को दुर्व्यवहारों से मुक्त करे। शुभ व्यवहारों की प्रेरणा दे। सांप, शेर, बाघ अपने व्यवहारों के द्वारा दूसरों की जान का अपहरण करते हैं। धन, जान, माल, सम्मान का अपहरण अधर्म है। मनुष्य अपने निकट के सम्बन्धियों के साथ दुर्व्यवहार करता है। एक नौजवान अपने सिक्ख पिता के सामने सिर मुंडवाकर सिगरेट के कश लगाता था और जहां से पिता गुरूद्वारे से वापिस आते, उस मार्ग पर बैठ जाता था। जितने घोटाले हैं, सब धन के अपहरण होते हैं। बड़े बड़े राजनैतिक लीडर, अमीर, कहलाने वाले बड़े अफसर दुर्वहवारों की मुंह बोलती तस्वीर हैं। धन का लालच, काम वासना आदि भाव मनुष्य को हिंसक बनाते हैं। गांव के नौजवान भाईयों की उदाहरण दी, जिन्होंने माता की सेवा के हृदय स्पर्षिय दृष्य पैदा किए। शुभ व्यवहारों के बिना डाक्टर, दुकानदार डाकूओं जैसा व्यवहार करने लगते हैं। देवात्मा सत्गुरू के देव प्रभाव मनुष्य को श्रद्धा, और सेवा के व्यवहार करने के योग्य बनाते हैं। उपकारियों की दुनियां दिखा देते हैं। श्रीमान भाई अतर सिंह जी डरोली भाई को चढ़ावा लेना बन्द करवा दिया। परोपकारी बना दिया। माता की श्रद्धा पूर्वक सेवा करने का रिर्काड बना दिया। सभापति जी ने शुभ व्यवहारों की सुन्दर तस्वीर पेश करके धर्म के वास्तविक व्यवहारों के रूप के बहुत सुन्दर दर्शन करवाए।

3 बजे शाम:- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी।

पहली दो सभाओं के बारे में पूछकर उनको दुहराया और बताया कि धर्म मतों में जितनी शिक्षा दी है, वह सारी ठीक नहीं। विशष रूप से संसारिक सम्बन्धियों वा समानों को माया समझना और सचमुच के सम्बन्धियों को धर्म मार्ग में रुकावट वा बन्धन समझना, उनको त्याग करके, पर्वतों और जंगलों में जाकर कल्पित अस्तित्व की अराधना करना और ईश्वर को ही सत्य और सार समझना। पाप वा पुन्य की समझ व्यवहारों से ही होती है। समाजिक गुणों की प्राप्ति ही धर्म है। ईमानदारी की समझ ही नहीं रहती यदि दूसरे मनुष्यों को माया समझा जाए। परम पू0 भगवान देवात्मा ने धर्म सम्बन्धी सब भ्रान्तियां दूर कर दी है। वास्तविक के सम्बन्धियों का सच्चा रूप दिखाया है। जिम्मेवारियों को त्यागना धर्म नहीं हो सकता, बल्कि पाप है। उन्होनें फरमाया है कि वही व्यक्ति धर्मवान हो सकता है जो सम्बन्धों को सच्चे रूप में पहचान कर शुभ व्यवहार कर सके। स्वामी रामतीर्थ जी के परिवार त्याग की नकल शुभ पैदा नहीं कर सकती। वह लाहौर में मैथ के अध्यापक थे।

देवात्मा ने सच्चे अध्यापिक पैदा किए हैं। कनल जी ने विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण की, उनकी दिमाग़ी उन्नति की सेवा की, जो एक लासानी उदाहरण है। मुसलमान बेबस पुकार उठते थे कि खुदा ने देव समाजियों को हमारी लड़कियों की हिफाज़त के लिए पैदा किया है, श्रीमान प्रेम जी के परिर्वतन ने केसूपुरा वा

मल्लेका में हलचल पैदा कर दी। श्रीमान शाम सुन्दर जी रस्मी दुनियांदारी के कारण सभा में आते थे। उनको माता के सम्बन्ध में अपने व्यवहार नज़र आए। देव धर्म पूजा पाठ, या कहलाने वाले साधनों की शिक्षा, जैसे स्नान वा धार्मिक स्थान के दर्शनों में विश्वास नहीं करता है। व्यवहारों में उच्च परिवर्तन पैदा करता है। मनुष्यों को उनके सम्बन्धियों के साथ उच्च मेल पैदा करने के योग्य बनाता है। प्रेम जी का जो मेल अपने माता पिता, अपने मामा जी के साथ, विशेष रूप से अपने उपकारी चाचा जी के साथ हुआ है, वह इस बात को सच्च करता है :-

"भाता नहीं है आपका नाम सब को,
झुकाता है पर, आपका काम सब को"

इस प्रभाव ाली सभा से कई जन बहुत प्रभावित हुए, एक माननिय अध्यापिक सभा के बाद सभापति जी के पैरों में प्रणाम करने के लिए मजबूर हो गए।

5.2.2010- शाम 8 बजे :- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। इसमें सभापति जी ने बताया कि मनुष्य सब काम अपने भावों से परिचालित होकर करता है। क्योंकि मनुष्य में सधारणता नीच भाव ही होते हैं और बहुत ज़ोरदार हैं, इसलिए आम तौर पर मनुष्य अधिकतर गल्त काम करता है, उसी में खुश और लीन रहता है। मनुष्य के भीतर उच्च भाव बहुत ही कम हैं और वह अकसर कमज़ोर होते हैं, इसलिए मनुष्य भले के काम वा उच्च काम कम ही कर सकता है, कबीर जी ने कहा है:-

"मैं अपराधी जन्म का, नख़ सिख़ भरे विकार"

बाबा फरीद जी लिखते हैं!-

"काले मैंडे कपड़े, काला मैंडे वेश,
गुनाहीं भरिया मैं फिरां, लोक कहण दरवेश"

मनुष्य के जीवन की सफलता नीच भावों को मिटाकर उच्च भाव पैदा करने में है। गुरू महाराज फरमाते हैं:- "परहित भाव हृदय उपजाओ, धर्म मार्ग की दिग तब जाओ" परहित भाव कई हैं, हमदर्दी, शुक्रगुज़ारी, श्रद्धा, हानि परिशोध आदि। इस सभा में हम एक ही भाव हमदर्दी के विषय में विचार करेंगे। बाकी के विषय में ईशारा ही करेंगे। हमदर्दी के भाव का ब्यान करते समय उन्होंने एक छोटे बालक की बिमार मां की सेवा में सारी रात जागने की घटना का भी ब्यान किया। बिना इस सुन्दर भाव के दूसरों का दुख दुखी नहीं करता, दुख दूर करना ही नहीं सूझता बल्कि और कठोर होकर ज़ुल्म करने की सीमा तक पहुंच जाता है मनुष्य। स्वार्थ वश मनुष्य और कठोर, निर्दयी और ज़ालिम बन जाता है। हमदर्दी करते करते मनुष्य फरिश्ता बनने की राह पर पड़ जाता है। भक्त पूर्ण सिंह इस सुन्दर भाव के कारण पंजाब के महान धर्मी बन गए। इस भाव ने मदर टैरेसा को नौकरी, शादी त्याग करके मानवता की सेवा में लीन कर दिया। सारी दुनियां भर में सेवा का मिशन फैला दिया। सारे विश्व में रुतबा और सम्मान हासिल किया। इसके सामने बड़े बड़े सम्मान तुच्छ हो गए। भगवान देवात्मा ने अपने सेवकों के अन्दर यह भाव संचार करके विशुद्ध परोपकारी जन पैदा किए हैं। कई बर्बादी करने वाले जन, स्वार्थी जन परोपकार में ही जान और ज़िन्दगी महसूस करते हैं। श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी, श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी जैसे परोपकारी अभी दुनियां ने देखने हैं।

6.2.2010 सुबह 9.30 बजे:-
सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। सभापति जी

ने प्रश्न किया कि ब्यूटी पारलर में सबसे महत्वपूर्ण कौन सी चीज़ होती है। सबको पता था कि शीशा वा दर्पण। इसके बिना न चेहरा देखा जा सकता है, न संवारा जा सकता है। अपने स्वभाव को देखने वा अपनी परिचालक शक्तियों के देखने, उन शक्तियों वा भावों के द्वारा की गई गतियों को जानने के लिए, इन गतियों के द्वारा आए परिवर्तन को देखने, उसके कारण कैसा रूप बन गया है, उस सबके लिए भगवान देवात्मा की ज्योति रूपी शीशे की अवश्यकता है। चेहरे के दाग शीशा दिखाता है परन्तु आत्मा के दाग सत्गुरू की ज्योति दिखाती है। मनुष्य का आत्मिक अन्धकार बढ़ता ही जाता है। माईकल जैक्सन जैसे विश्व प्रसिद्ध पौप सिंगर अपने नीच भावों की भेंट चढ़ गए। स्वार्थ ने प्रवीन महाजन पर अपने उपकारी बड़े भाई का कातिल होने का कलंक लगा दिया। बेटी ने अपने पति को साथ मिलाकर अपने पिता, माता, बहन, भाई, मामी और भाई के बच्चों समेत 8 अपने खूनी रिश्तेदारों का कातिल बना दिया।

नीच भाव इतना अन्धकार पैदा कर देते हैं, जो देवात्मा के दर के बिना नज़र नहीं आता। आत्मा के देश में केवल देव ज्योति द्वारा ही प्रवेश कर सकते हैं। देव ज्योति ऐसा शीशा है जो हमारे व्यवहारों के हर पहलू पर रोशनी डालकर हमारा अपना आप दिखा सकती है। कई जन अपने गुनाहों को देखकर शर्मसार होते हैं, कई स्वंय अपने आपको सज़ा देने लगते हैं। कई जन अपना कुरूप आत्मिक रूप देखकर मुंह काला करके, जूतों में बैठ जाते हैं। डा0 श्री राम जी को जब अपना रूप नज़र आया तो अपनी पुत्रवधु, अपने बेटे वा अपनी पत्नी से क्षमा मांगने में कोई झिझक महसूस नहीं की। अपना चोर, पापी वा मान बढ़ाई का दास रूप नज़र आया। दूसरों की जान की भी परवाह न करने वाला रूप नज़र आया। जैसे जैसे ज्योति मिलती गई, उनका लालची स्वार्थी वा अपहरणकारी रूप घटता गया। सदगुणों से ह्रदय सुसज्जित होता गया। विश्व में यह दर्पण दुर्लभ है।

वहां उपस्थित जनों से ही उदाहरणें लेकर सभपति जी ने इस दुर्लभ ज्योति की महानता वा महत्व को रोशन किया। कई जन सभा सं गहराई से प्रभावित हुए।

दुपहर 3 बजेः – सभापति श्रीमान बलबहादुर जी। सभापति जी ने बताया कि पटियाला के बस अड्डे पर एक जन पुकार पुकार कर कहा करता था कि "अखिंयां वालों, अखियां बडी नेअमत हैं" उसकी असहाय वा कृपा पात्र अवस्था देखकर लोग तरस करते थे और उसको कुछ न कुछ रुपये दे देते थे, परन्तु उसकी अन्धता को कोई दूर नहीं कर सका। आत्मिक दृष्टि से सारा विश्व ही अन्धा है। उच्च भाव ऐसी आंखें हैं जिनसे कुल दुनियां सुन्दर नज़र आती है। एक नौजवान से पूछा गया कि क्या तुम्हारे पिता में कोई गुण हैं? उसने कहा कि मुझे तो एक गुण नज़र आता है कि वह मेहनती बहुत हैं, और तो कुछ मुझे पता नहीं लगता। वह देवात्मा की पैदा की हुई संगत में कई वर्ष आते रहे। इस वातावरण ने नई दृष्टि पैदा कर दी। अब वह पिता को विशेष श्रद्धा की दृष्टि से देखते हैं और उनकी सेवा करके धन्य-धन्य अनुभव करते हैं। माता के ईलाज वा सेवा में लगे हुए हैं। कहने को कहते हैं कि तीसरा नेत्र विद्या है। परन्तु जो

श्रद्धा और शुक्रगुजारी का नेत्र पैदा करते हैं, उसके बिना माता पिता का श्रद्धा भाजन रूप नहीं नज़र आता था। शुक्रगुज़ारी के बिना किसी उपकारी का उपकार नज़र नहीं आता। उपकार कर्ज़े वा बोझ के रूप में अनुभव नहीं होता। गुरू महाराज फरमाते हैं, जो जन उपकार पाकर प्रति उपकार नहीं करता, वह हमारे निकट खुदर्गज़, पापी और कमीना कहलाता है।

देवात्मा के देव प्रभाव माता पिता, अध्यापिकों डाक्टरों के उपकार जिस सुन्दर रूप में दिखाते हैं, वह सुन्दरता और रस एक नई किसम का है। धर्म की दुनियां का अनुभव एक अजीब अनुभव है। एक बेटा मां को फल खिलाता है और पिता से प्रश्न करता है कि फल तो मां खा रही है, परन्तु मुंह मेरा मीठा हो रहा है। ऐसी धर्म वहीन दुनियां में ऐसे रसमय दृष्य भगवान देवात्मा ही पैदा करते हैं। वह नई आंख पैदा करते हैं, जो ह्रदय के अन्धेरे को दूर करती हैं। काश! दुनियां को इस अन्धेपन का अहसास हो सके।

शाम 8 बजे:- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी।

इस सभा के शुरू होने तक बाहर से आने वाले धर्म सम्बन्धियों की गिणती 60 के लगभग हो गई थी। बताया गया कि मनुष्य को सत्संग की अवश्यकता है। इसके बिना मनुष्य की बहुत से समान होकर भी ज़िन्दगी बर्बाद हो जाती है। एन. डी. तिवाड़ी भारत के प्रमुख सफल राज नैतिक लीडरों में से हैं। पर जिस प्रकार बे-आबरू होकर अपने पद से उन्हें हटना पड़ा है, वह कभी न होता यदि उन्हें ऐसा सत्संग मिल जाता। ऐसे घिनौने *video* बन जाएंगे, इसका अनुमान नहीं किया जा सकता था। हमारे पड़ोस मे बच्चे माता जी को वा अपनी दादी जी को ग़ल्त शब्द बोलते हैं। यह घर घर की कहानी है। परिवारिक जीवन जहन्नुम बने हुए हैं। देव प्रभाव दायक संगत में श्रद्धा वा सम्मान के दृश्य पैदा होते है। लड़कियां माता जी की सेवा करती हैं। दामाद अपनी सास की सेवा करके धन्य धन्य होते हैं ।

यह सत्संग बुराई के प्रति घृणा पैदा करता है। एक नौजवान की किसी ग़लती के कारण पुलिस ने पकड़ लिया। ग़ल्ती उसकी थी, इसलिए पिता ने वा और धर्म सम्बन्धियों ने, जो इस सत्संग से जुड़े हुए थे, छुड़वाने से इन्कार कर दिया। लड़के को संगत मिली, अपनी ग़ल्ती के लिए रो रोकर क्षमा मांगी। आश्चर्य-जनक परिवर्तन उसमें आया।

एक और जन ने कहा कि श्रीमान जी मैं इतना ना काबिले इतबार था कि मेरे एक रिश्तेदार ने मांगने पर मुझे 15 किलो आटा नहीं दिया। अब बड़े दुकानदार मुझे मजबूर करके 30-35, हजार रुपये तक उधार दे देते हैं। मुझे दूध देने वाले अपनी चाय बन्द कर देते हैं, पर थोड़ा होने पर मेरा दूध बन्द नहीं करते। सत्संग की महिमा का बहुत सुन्दर ब्यान किया।

7.2.2010- सुबह 9 बजे:- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। भजन गाने के बाद फूलों से पू0 भगवान की छवि का अर्चन किया गया। देव स्तोत्र के गान के बाद सभापति जी ने देवस्तोत्र की भावपूर्ण होकर व्याख्या की । फिर पू0 भगवान के दरबार का ध्यान धर कर बहुत ज़ोरदार सहाय वा आर्शीवाद प्रार्थना की। फिर सभापति जी ने फरमाया कि पू0 भगवान विकास क्रम की उच्चतम देन हैं। यह विश्व का सबसे

बड़ा वरदान हैं। जैसे मनुष्य का ही नहीं, सब जीवधारियों का जीवन सूर्य पर निर्भर है। उनकी देव ज्योति वा देव तेज के बिना आत्मा की सोझी वा ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता। मिथ्या ज्ञान बहुत है।

पू0 भगवान फरमाते हैं कि आत्मा जीवनी शक्ति है। इसका धीरे धीरे विकास हुआ। एक सैल के जीवों का विकास होते होते पशु, पौधे और फिर मनुष्य की उत्पत्ति हुई। विकास क्रम में मनुष्य पैदा हुआ, इसलिए वह विकास के नियमों के अधीन है। मनुष्य ने विकासकारी कामों को पहचान कर विकास का साथी बनना है। विकास का विरोध कर आत्मा का नाश होता है। देवात्मा का आर्विभाव समय से बहुत पहले हुआ है। क्योकि अभी मनुष्य की मानसिक वा हार्दिक अवस्था इतनी विकसित नहीं हुई कि वह उनको पहचान सके।

श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी, श्रीमान ईश्वर सिंह जी, श्रीमान मेवा सिंह जी और श्रीमान गुरबख्श सिंह जी ने इस स्थान पर अनथक परिश्रम किया है। परन्तु फल नाम मात्र ही प्राप्त हुआ है। जिन्होंने अपने अन्धकार के कारण इस कारज को नहीं पहचाना, जीवन बर्बाद कर लिए।

परम पू0 भगवान देवात्मा ने फरमाया है कि जीवन सम्बन्धों पर आधारित है। उच्च भावों पर आधारित सम्बन्ध ही विकासकारी सम्बन्ध हैं। यह सभा भी उन सम्बन्धों के प्रति ज्ञान पर आधारित है। पश्चिमीं देशों में *Father's Day, Mother's Day* आदि गिफट देकर मनाए जाते हैं। कल्याण कर्ता गुरू की कृपा से यहां कल्याण करने का बूथ बनाया है।

आगे ब्यान से पहले जगदीष जी ने "मां प्यारी मां, गोद में तेरे खेला बचपन मेरा।" नामक भजन भाव विभोर होकर गाया।

सभापति जी ने फरमाया कि पशुओं के बच्चों का सम्बन्ध अपनी मां के साथ दूध पीने तक ही होता है। इसी प्रकार मनुष्य के सम्बन्ध भी स्वार्थ पर ही अधारित हैं, इसलिए घरों में दु:ख है। एक मां अपने साधु बेटे को मिलने गई, शाम तक न मिलने पर रो धोकर वापिस आ गई, पर साधु बेटे का दिल उसके रोने धोने से नहीं पसीजा। एक स्वार्थी बेटे ने अपने पिता की आंखों में मिर्चे डालकर नहर में फैंक कर मार दिया। ऐसी बेरहमी और जुल्म की घटनाओं से अखबार भरे पड़े होते है। सभापति जी ने कहा कि मेरी मां ने भी कहा था कि मेरे पास बैठने का तेरे पास समय नहीं। गुरू महाराज ने सम्बन्धों की दुनियां दिखाकर जो कल्याण किया है, उस का वर्णन नहीं हो सकता। पू0 भगवान ने कृतघ्न बच्चों को शुक्रगुज़ार बनाया हैं। जैसे हरफूल ने गाईयों को कसाई से छुड़वा लिया और खुद फांसी पर चढ़ गया। इसी प्रकार पू0 भगवान से बच्चों द्वारा माता मिता के दुख, अपमान, बेकदरी देखी नहीं गई, उन्होंने बीड़ा उठा लिया कि सच्चे धर्म का संचार करके मनुष्यात्माओं को माता पिता का उपकारी रूप दिखाकर सेवाकारी बनाना है।

सभापति जी ने माता पिता के महान उपकारी रूप को बताते हुए, और माता की कुर्बानियों को याद करते हुए बताया कि एक मां ने अपने बच्चे को बचाने के लिए बर्फानी तूफान में अपने सारे कपड़े बच्चे पर लपेट दिए और खुद बर्फ पर लेट गई और बच्चे के लिए शहीद हो गई। एक पिता ने अपने बच्चे को बचाने के लिए चिड़ियाघर में एक शेरनी से तीन

मिन्ट तक युद्ध किया, बच्चा बचा लिया परन्तु उसका अपना बाजू नकारा हो गया।

जैसे-जैसे माता पिता की कुर्बानियां बताई जा रही थी, त्यों त्यों वातावरण भावपूर्ण बनता जा रहा था। फिर रूस में एक मां की घटना बताई कि 10 दिन बाद भुचाल के मलबे में दबी मां ने अपने बच्चे को जिन्दा रखने के लिये अपनी ऊंगलियां काट काट कर खून पिलाया अर्थात् वह अपने बच्चे को दूध की जगह अपना खून पिलाती रहीं, इस प्रकार कुछ दिन दूध पीकर, फिर खून पीकर बच्चा जिन्दा रहा।

सभापती जी ने बताया कि हमारी सारी योग्यताएं माता पिता की देन है। ऐसे माता पिता बच्चों के हाथों बेज़ार नज़र आते हैं। फिर पू0 भगवान द्वारा रचित माता पिता सम्बन्धी भजन का गान किया गया।

श्रीमान गुरूदेवराज जी बताते रहते हैं कि यदि मुझे यह शिक्षा न मिलती, मेरे पिता कभी मेरे पास नहीं रह सकते थे। मैं जो उनका सत्कार वा सेवा करने के योग्य हुआ हूँ उससे वंचित रह जाता। अब अपना सेवा द्वारा भला कर रहा हूँ। उनका उपकारी रूप कभी न देख सकता । श्रीमान जी ने 12 बजे के लगभग यह सभा समाप्त की और धर्म सम्बन्धियों को अपने भाव प्रकाश करने के लिए प्रेरित किया।

भाव प्रकाश

श्रीमान बलबहादुर सिंह जी :- (आंसू बहाते हुए) उन्होंने कहा कि मेरे एक चन्द्रमा छुप गए हैं- मेरे माता जी चले गए, दूसरी ओर बादल घिरे हुए हैं अर्थात पिता जी कमज़ोर हो रहे हैं। माता जी का काम करते हुए बहता पसीना और पिता जी का मेहनत करते ऊंगलियों से निकलता खून आज नज़र आकर दिल को हिला रहा है। उनकी पवित्र कमाई वा कुर्बानी बार बार नज़र आकर हृदय को झंझोड़ रही है। उनका महान उपकारी रूप गुरू ने दिल पर अंकित कर दिया है। कुछ सम्मान का भाव पैदा हुआ है, कुछ सेवा भी करता हूँ। सत्गुरू ने यह सम्बन्ध स्वर्गीय बना दिया है। दिल में आता है कि माता पिता को गहरी श्रद्धा का उपहार दूं । काश! ऐसा हो सके। गुरू के उपकारों का बदला दिया नहीं जा सकता। ऐसी कामना उठती है कि ऐसे तारणहारे गुरू के और निकट हो सकूं, उनका संदेश और अधिकारी आत्माओं तक पहुंचा सकूं।

श्रीमान जगजीत सिंह जी लुधियाना:- यहां आकर सम्बन्ध तत्व की समझ आई। माता पिता का सम्बन्ध, सेवा और सम्मान का बन गया है। पिता जी की खेतों में की कुर्बानी उनके आगे झुकाती रहती है। इस स्थान की कुछ और सेवा करने के वलवले उठते रहते हैं।

भरपूर कौर

यहां आकर जो कुछ मिला है, वह बताया नहीं जा सकता (रो रोकर) मेरी सास मां का उपकारी रूप नजर आया है। उनके सम्बन्ध में दुश्चिन्ता करती रहती थी। मैं समझती थी कि उन्हें पैंशन मिलती है, उन्हें मेरी सेवा की ज़रूरत नहीं, मां की सेवा ज़रूर करूंगी। अब जाते हुए उनको मिलकर जाऊंगी। मेरी सास मां ने मेरे धर्म सम्बन्धियों के पैर छूए कि इन्होंने मेरे बेटे को बचा लिया। यहां आकर नई दृष्टि बनी है। यहां आकर बहुत भला हुआ है। आगे हमेशा आते रहने की प्रेरणा मिली है।

श्रीमान जागीर सिंह जी केसूपुराः- यहां आकर बहुत सेवा और सम्मान पाया है। हृदय कठोर हो चुका था, यहां आकर कुछ नम्र हुआ है। अपना ऊंचा बोलना बुरा लग रहा है। माता पिता के उपकार सामने आकर झुका रहे हैं। पिता जी ने जंगल साफ करके ज़मीन पैदा की है। उन्होंने दादा जी की सेवा करके मेरे सामने नमूना रख दिया। दिल उनके चरणों में झुक रहा है। पिता जी के नाम पर पशु पक्षियों की सेवा करता हूँ। एक घटना दुखी कर रही है। माता जी की सेवा तो क्या करनी थी, घर से भाग कर उन्हें बहुत दुख पहुंचाया। उनके भीतर बहुत हमदर्दी थी। मैं कठोर होता जा रहा था। गुरू ने बचा लिया। पिता जी की सेवाओं का वर्णन किया, बहुत ईमानदार थे, गरीबों की सेवा करते थे, न्याय प्रिय थे। गेहूं का भाव पता लग गया कि ज़्यादा है, परन्तु अपने पहले वायदे पर ही पक्के रहे। मेरी माता ने सोतेले होनें का एहसास मुझे कभी नहीं होने दिया।

श्री राजेन्द जी देहरादूनः – (इन्होंने धीमान साहिब के पैर छूकर उनके गले में हार डाला और प्रणाम किया, जिन्होंने इस सत्संग से जोड़ा)अपने पिता का फोटो पास है, माता पिता के उपकारों का कोई ज्ञान नहीं था। मेरा उजड़ा हुआ घर बसा है। पत्नी ने मेरा साथ देकर सारी उमर के लिए मुझे कर्ज़दार बना दिया है। गुरू ने काया पलट दी। मेरा कोई 100 रुपये का भी एतबार नहीं करता था। अब लोग सारा घर मेरे सपुर्द कर देते हैं। बच्चे भी मुझे प्यार करने लगे हैं। बहुत खुशी प्राप्त हुई है।

श्री चमन जीः - उपकारी नज़र आए हैं, जिनकी कृपा से यह दर मिला है। बलबहादुर जी ने उपकारियों को दिखाने का यत्न किया, मुझे अपने नाशुकरे पन की समझ आई है। मैंने अपनी उपकारी की बेटी को अंडा खिला दिया, उन्होंने मुझे नहीं डांटा, परन्तु जब मेरी बहन ने मेरे बच्चों के साथ ऐसा किया तो मुझे उनके दुख का एहसास हुआ। आगे से सभा में आया करूंगा।

सुखदेव जी की बहनः - (सुखदेव जी स्वंय लंडन में हैं) माता का उपकार नज़र आया है। काश! मेरे भाई हुशियार सिंह जी की ज़िन्दगी भी संवर जाए।

हुशियार सिंह जी केसूपुराः – मैं अपनी बहन को हर दफा रुलाकर ही भेजता हूँ वह मुझे मां की तरह प्यार करते हैं। आगे से कोशिश करूंगा कि मैं उन्हें दुखी न करूं।

धीमान साहिब जीः – पिता जी के सम्बन्ध में अवज्ञा नज़र आई। मैं उनके जीते जी नशों से मुक्त नहीं हो सका। मुझे इस अपराध का दुख है।

कुलदीप जी और बलजीत सिंह जी ने भाव प्रकाश किए, अगले अंक में देने की कोशिश करेंगे।

फिर वर्तमान सब लड़के - लड़कियों और अन्य सौभग्यवान जनों ने अपने माता पिता का फूलों के हारों के द्वारा, चरणों में प्रणाम करके सम्मान किया। बहुत ही स्वर्गिय नज़ारा था। गुरू महाराज का और सहायकारी शक्तियों का ध न्यवाद करते हुए जय ध्वनि के साथ इस संगत का समाप्न हुआ। 7100 रू0 लंगर के लिए दान प्राप्त हुआ।

(एक सेवक)

पेज 2 का बाकी

तो कोई मोल ही नहीं, कोई गल्ती हो भी सकती है, सभाओं में मेरे हृदय की हालत बहुत बदलती गई। मेरे लिए जो कुछ किया गया, वह सब अच्छा ही अच्छा दिखाई दिया, अपनी शराबी, कबाबी और घृणित हालत नज़र आई, जिसनें मुझे इनसे बचाया, वह सब नज़र आने लगा, अपनी एक भयानक और नीचता नज़र आई कि मैने एकता को जब वह एक दो साल की थी, चोरी अण्डे खिलाने का पाप करता रहा, जब मुझे टोका गया तो मुझे कोई दुख न हुआ, अब जब मेरी बहन ने मेरे बच्चों को अण्डे खिला दिए तो मुझे दुख हुआ और पता लगा कि मैंने खेड़ा साहिब को कितना दुख पंहुचाया और कितना बड़ा अपराध किया। इस संगत में कुछ और गल्तियां और नीचताएं भी नज़र आती हैं, परन्तु बाद में फिर रास्ता बन्द हो जाता है, सत्संग की कीमत इधर आकर ही नज़र आती है, आगे से सत्संग की कीमत को सामने रखूंगा और अवश्य लाभ उठाऊंगा।

खेड़ा साहिब के चरणों में झुककर मुआफी मांगता हूँ। अब घर छोड़ने का बहुत दुख हो रहा है। मुझे माता जी ने वहां बेहद प्यार किया, अब वहां से नाता टूटने पर अपना सब भला बन्द हुआ लगता है। दुख होता है, बेबसी महसूस होती है।

17 वर्ष से खुली छूट से सब कुछ मुफ्त खा रहे थे। सब कुछ इनका 110 प्रतिशत खाता रहा। मेरा सारा परिवार सब कुछ खुला खाता रहा, तनख्वाह भी बहुत अच्छी मिलती थी और हर वर्ष माता जी, खेड़ा साहिब और विनीत जी इसके ईलावा मुझे 50/60,000 या अधिक अलग देते रहे, इस सब से मेरा मकान बन गया।

जो मेरा भला चाहते थे, श्रीमान जी और बलबहादुर सिंह जी, उनके कहने को मैं बुरा देखता रहा। उल्टा उन्हें दुश्मन देखता था, वह तो मेरा भला चाहते हैं। यह इस संगत से जुड़े रहने पर ही नज़र आया है। उस दिन से अब मैं हररोज़ आते जाते मकान को प्रणाम करता हूँ और दिली भावों से करता हूँ अब दोनों का फोटो रखा है, और उनका उपकार महसूस होता है, और प्रणाम करता हूँ और करता रहूंगा। सत्संग से लाभ उठाऊंगा। उनकी गल्तियां, गुस्सा, कमियां देखता और अपनी नहीं। अब महसूस होता है। मैं फट रहा था, वह दिखाई दिया। उनका फटना बुरा लगता था और दूरियां बढ़ती रही, रात को ख़्वाब आए तो देखा कि मैं खेड़ा परिवार में काम कर रहा हूँ, जाग खुली तो बड़ा मन पिघला और रोना आया और दिल हल्का हुआ। माता जी और एकता का बहुत प्यार आता है। विनीत जी और खेड़ा जी का किया बहुत नज़र आता है कि चाहे किसी बहाने मैं निकल आया, मगर यह भी मेरे भले का ज़िरिया हो गया कि मैं अपने पावों पर खड़े होने का संग्राम करने लगा, अपनी नफरत, जिस किसी के लिए भी हो, वह मेरे लिए बहुत हानिकारक है मैंने उसको कम करना है, और इसकी पूरी कोशिश करूंगा, जब तक जिऊंगा, यह कोशिश करूंगा कि जो कुछ मेरे लिए किया गया है, वह याद रखूं और नफरत दूर हो। जो हो सके वह सेवा करूंगा, इसमें मेरा भला नज़र आता है, यह सब कुछ यहां सभाओं में आकर ही नज़र आता है। इसके बाहर नहीं।

श्राद्ध का साधन

श्रीमती प्रीतम कौर जी सिद्धू (धर्म पत्नी) सरदार बचित्र सिंह जी सिद्धू, तहसीलदार, पुत्री श्रीमान झण्डा सिंह जी 'अलम' का 15 जनवरी को देहांत हो गया और उनका अन्तिम संस्कार 25 सैक्टर में उनकी इच्छानुसार देव समाज विधि से किया गया। इसमे सैंकड़ों जन शामिल हुए, फिर उनकी अस्तियां और राख़ भी भाख़ड़ा नहर के साफ पानी में प्रवाहित की गई। श्रीमान बलदेव सिंह जी और उनके बच्चों ने मिलकर यह अन्तिम क्रिया सम्पन्न की।

उनके सम्बन्ध में श्राद्ध पूर्व भी श्रीमान बलदेव सिंह जी सभाएं करवाते रहे, जिसमे उनके परिवारिक जन शामिल होते रहे और हितकर बातचीत भी होती रही।

देह त्यागी के सम्बन्ध में 24 जनवरी को श्राद्ध की सभा उनकी कोठी के पिछले खुले आंगन में रखी गई। गुरू महाराज की छवि की स्थापना के बाद उसके नीचे मेज़ पर देह त्यागी की फोटो और उनके प्रयोग की कुछ वस्तुऐं रखी गई। बहुत सुन्दर बिछाई की गई और हाजरीन के लिए सैंकड़ों कुर्सिया रखी गई। स्टेज आदि का प्रबन्ध श्रीमान जगदीष जी ने पंहुच कर किया।

400 के लगभग परिवारिक वा अन्य जन इसमें शामिल हुए। पहले वैराग्य सम्बन्धी ''उच्च जीवन ही सार'' नामक भजन का गान किया गया। बहुत संजीदा वातावरण बन गया। फिर परम पू0 भगवान देवात्मा की सुन्दर छवि का हार द्वारा अर्चन किया गया। फिर देह त्यागी की फोटो पर परिवारिक जनों ने हार डालकर सम्मान किया, अन्य जनों ने फूलों से सम्मान प्रदर्शन किया।

सभापती जी ने श्रद्धांजली का मन्तव्य बताते हुए प्रोग्राम का संक्षेप परिचय दिया। फिर जगदीष जी और अन्य धर्म सम्बन्धियों ने मिलकर "परलोक के सम्बन्धियों को हम नहीं बिसराएंगे" नामक भजन का गान किया।

इसके बाद सभापति जी ने बहुत संक्षेप में बताया कि देव समाज क्या है, उसकी विज्ञानमूलक शिक्षा का वर्णन किया। फिर नेचर, मनुष्य की उत्पत्ति, परम पू0 भगवान देवात्मा के आर्विभाव के बारे में बताया गया। फिर मनुष्य कहां से आता है, उसका लक्ष्य क्या है और कहां चला जाता है, इसके विषय में गुरू महाराज की शिक्षा का संक्षेप वर्णन किया गया। परलोक के विषय में विज्ञान मूलक सचाईयों पर प्रकाश डाला गया। परलोक क्या है? देव धर्म क्या है? हृदय परिवर्तन और कुछ और पैंफलट वहां विशेष स्थान पर सजाए गए, जो पब्लिक को free दिए गए।

मनुष्य जीवन का लक्षय बताते हुए सभापति जी ने बताया कि अपने जीवन का और विशेष कर आत्मा का विज्ञान मूलक ज्ञान पाना और आत्मा को नाश से बचाना और आत्मा का विकास करना, अर्थात आत्म ज्ञान और आत्म कल्याण ही जीवन का सही लक्ष्य है। परलोक के विषय में बताया गया कि मरने के बाद भी ज़िंदगी है। वह निर्माणकारी

गतियों से बचती है, *By building others, we building ourselves, by destroying others, we destroy ourselves.*

सूक्ष्म शरीर क्या है और कैसे बनता है, परलोक में कैसे स्थान पाता है। संसार के कोई पदार्थ वा सम्बन्धी साथ नहीं जाते, केवल हमारा नीच वा उच्च जीवन ही हमारे साथ जाता है। कौन कौन मनुष्य परलोक नहीं जाते, वह *earth bound* ही रह जाते हैं, उनके बारे में बताया गया।

आखिर में बीबी प्रीतम कौर जी के विषय में बताया गया, किस प्रकार यह सांघा परिवार, उनके माता पिता देव समाज के पुराने इतिहास के एक महत्वपूण अंग रहे हैं, इसके विषय में बताया गया। तीन समाजिक क्रान्तिकारी लहरों ने परलोक वासी आत्मा को तराशा है, देव समाज, प्रीतलड़ी और आज़ादी की लहर या कांग्रेस, इन तीनों ने उनके जीवन में गहरी लहर छोड़ी। उनकी शिक्षा देव समाज में हुई। वह टीचर भी रहीं। वह कई बार अमरीका, कैनेडा गई। वह किसी गुरूद्वारे, मन्दिर, मस्जिद गुरूद्वारे, देव देवता के साथ नहीं जुड़ी, वह बहुत नेक, ईमानदार, न्याय प्रिय, स्वच्छ, सुन्दर वा सेवाकारी जीवन रखती थी। ऊंच, नीच, गरीब, अमीर का उनके सामने कोई अन्तर नहीं था। सबको प्यार वा स्नेह देती थी। उनका घर हमेशा एक *Relaxing camp* बना रहा है। उनके पास उनके बुजुर्ग माता पिता, बहन भाई, उनके बच्चे, गांव के रिश्तेदार, हफ्तों, महीनों रह जाते थे और खूब खुश रहते थे। वह हमेशा दूसरों के काम आती थी। वह विज्ञान पर आधारित विचार रखती थी। वह परिवार में सबसे बड़ी थी। उन्होंने सबको स्नेह वा सेवा बांटी है।

वह हमदर्द, श्रद्धावान वा दानी थी। खुले दिल से प्रशंसा करने वाली थी। वह बहुत नेक बहू, पत्नी, मां, सांस, बहन, बेटी, पड़ोसी थी। चाहे वह मालिक मकान थी या किराएदार, जो भी उनके सम्पर्क में आया, उनका ही हो गया।

फिर उनकी बेटी हरिन्द्र गिल ने लिखकर अपने बहुत सुन्दर भाव प्रगट किए (वह पत्र अलग से देंगे) फिर उनके पुत्र पवित्र सिद्धू ने, जो अमरीका से आए थे माता जी की उदारता वा खुले विचारों के विषय में बताया और उपस्थित जनों का धन्यवाद किया।

एक 90-95 वर्ष के सरदार जो बरनाले में सरदार बचित्र सिंह जी के साथ इकट्ठे नौकरी में रहे थे, खड़े होकर प्रीतम बहन जी का गुणगान किया। उन्होंने बताया कि वह हमारे घर आ आकर, हमें पक्के ईमानदार अफसर रहने की जोरदार प्रेरणा करती थी। उन्होंने बनाया कि मैं *D.C* भी रहा हूँ, पर मैंने बचित्र सिंह जी, जैसा नेक और ईमानदार अफसर नहीं देखा। मैं यह श्रद्धांजली देने के लिए इस उमर में आने के लिए मज़बूर हो गया। इस ब्यान के साथ सभा समाप्त की गई और ''हे देहत्यागी सम्बन्धी हमारे'' नामक भजन का गान करके देहत्यागी के मन की शान्ति और उनकी हर प्रकार से सुरक्षा के लिए कामना की। चार बार जय ध्यनि के साथ यह प्रभावशाली सभा समाप्त हुई। परिवार की तरफ से 21,000 रु0 का चैक और 4-5 हज़ार नकद दान इकट्ठा हुआ। देह त्यागी जी के दामाद श्री हरमोहन जी धवन ने अपने रैस्टोरैंट ''शहंशाह'' की ओर से *Vegetarian* भोजन

परोसा। सैंकड़ो जनों तक देव समाज का संवाद पहुंचा। उनकी बेटी हरिन्द्र गिल का पत्र नीचे दिया जा रहा है उन्होनें कहा :-

''मां तो लौके छां उधारी, रब ने स्वर्ग बनाया, मां वरगा घणछावां बूटा दुनियां विच किधरे नज़र न आवे, बाकी सब दुनियां दे बूटे जड़ सुकियां मुरझांदे, एह फुल सुकियां मुरझावे''

प्रो. मोहन सिंह

आज मेरी मां गई, जिसने मेरी आज तक की हस्ती को घड़ा, जिसने असीम प्यार, हिम्मत, जीवन जीने की कला आकाश छूने वाले दर्जे तक सिखाई, मेरी ज़रूरतों के आगे उसकी जरूरतें ख़त्म हो जाती और मेरे स्वाद कारण उसकी खाना पकाने की विधि बदल जाती। मेरी खुशी उसके साथ बांटे बिना अधूरी ही रह जाती। मेरी खुशियों में उसको ताज़गी मिलती। मेरी सफलताओं की सीढ़ियों की ऊंचाई से वह ऊंची से ऊंची होती अनुभव करती। मेरे फिकर उसे कुम्हला देते। मुझे किसी के साथ गिला हो, तो हर एक की शिकायत उसके पास लगा आती, यही एक अदालत थी, जिसमें उसकी शिकायत भी उसी के पास लगा देती। वह कुछ करती या न करती, पर उसके पास सुनवाई करके मेरे जख्मों पर अंगूर आ जाते।

एक ही जगह थी, मां का घर, जहां हर रोज़ जाने को दिल करता था। बेशक दिन में चार दफा जाओ, तो भी उतने ही चाव से इन्तज़ार करती थी। जहां जाकर अपनी मर्ज़ी अनुसार चाय बनाने को कह सकती थी, फिर कितनी बातें होती, बच्चों की पढ़ाई को लेकर विवाह तक पकाए खाने से लेकर घर की सजावट तक, घर में लगाए फूल पौधों से लेकर राजनीति तक, बहन भाईयों से लेकर सम्बन्धियों और मित्रों तक, सेहित के नुसख़ों से फैशन तक की बातें, इतनी पुरानी बातें जो सौ सौ बार करके भी ताजी ही रहती थी।

अब यह अदालत बन्द हो गई है। वह इन्तज़ार करने वाली आखें बन्द हो गई हैं, वह बातें सुनने वाले कान बन्द हो गए हैं, पता नहीं अब क्या करेंगे। आज सम्बन्धियों को इकट्ठे देखकर, उनकी सिसकियां सुनकर पता लगा कि वह केवल मेरी मां नहीं थी, वह किसी की मामी, किसी की बहन, मासी, भुआ, ताई भी थी और सब की मां थी। अपने परिवार के साथ साथ बीजी लोगों में भी प्यार बांटते रहे। उनसे बिछड़ने का सदमा केवल हमें ही नहीं लगा, उनके माता पिता के परिवार, सुसराल के परिवार में सबसे बड़ी होने के नातें, उन्हें भी लगा क्योंकि सबको ही उन्होंने मां का प्यार बांटा। पता नहीं कितना बड़ा वह छायादार वृक्ष था, उनके जाने का घाटा सब महसूस कर रहे हैं।

इतनी रोशन दिमाग थी मेरी मां कि मैं कभी उनको टूने, तवीत, पुच्छें, मढ़ियां, मसीते की तरफ तकते नहीं देखा। कभी किसी साधू सन्त को पूजते नहीं देखा। पाठ या मन्त्र जपने में उन्हें यकीन नहीं था। जिन्दगी के कठिन से कठिन समय में भी उन्होंने हिम्मत से काम लिया। सचाई का दामन किसी कीमत पर नहीं छोड़ा। कभी स्वपन में भी किसी का बुरा नहीं सोचा। अच्छा बुरा जो महसूस किया, बिना झिझक कह दिया। एक बेहद पारदर्शी शीशे जैसी साफ ज़िन्दगी जीकर, बहुत खुशनुमा वातावरण में सब सम्बन्धियों को मिलकर वह चली गई, पता नहीं कहां, पर हमें जीने का मार्ग दिखा गई।

यह दुनियां - जहां हर चीज़ लेने देने के हिसाब से तोली जाती है, सौदे में नफ़ा, नुक्सान देखा जाता है, छोटी छोटी बातें, कि फलां की बीमार होने पर हमनें फूल भेजे, फलां की शादी पर इतना शगुन पाया, फलां के बेटे की सिफारिश करक नौकरी लगवाई - उसको दो बार खाने पर बुलाया था, पर उसने हमारे लिए क्या किया। सगे भाई बहन भी सोचते हैं कि हमने दूसरे के बच्चे के लिए यह किया, वह किया, उसने मेरे लिए क्या किया। इस लेने देने की दुनियां में मां, जब तेरा मेरा बही ख़ाता खोलकर देखा, तो हैरान रह गई। जहां एक तरफ का ख़ाता भरा पड़ा है, जन्म मेरा और दर्द तेरा, बिमारी मेरी और अनिंद्रा तेरी, नम्बर मेरे आए, पर लड्डू तूने बांटे। डिगरियां मैंने प्राप्त की, पर पार्टीयां तूने दीं। विवाह मेरा हुआ, परन्तु पूरा ज़ोर तूने लगाया। मेरी हर खुशी के मौके पर, सबसे पहले सौगातें लेकर तुम पहुंचीं पर मैं आपके लिए क्या किया? कुछ भी नहीं। बही खाते का मेरा भाग तो खाली ही पड़ा है। पर बीजी याद रखना, बेशक शारीरिक तौर पर आप चले गए हों, परन्तु आपके दिए संस्कार हमेशा हमारे साथ रहेंगे। हर अवसर पर आप हमारे साथ रहोगे और हर दोराहे पर आप हमें रास्ता दिखाओगे।

आपकी बेटी
हरिन्द्र गिल

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :-

श्रीमान बलदेव सिंह जी,
House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229, 2716914

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री - देव - धर्म - मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर*
म. नं. 3154, सैक्टर 21 - डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।

Book Posts